

RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

Key Point

DATE
सितम्बर
27
2024

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index



By Ankit Avasthi Sir

भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में समुद्री जैव विविधता के संरक्षण के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए

भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में समुद्री जैव विविधता के संरक्षण के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसे औपचारिक रूप से राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार से परे जैव विविधता (BBNJ) समझौते के रूप में जाना जाता है। यह समझौता 2023 में राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार से परे क्षेत्रों की समुद्री जैव विविधता पर अंतर-सरकारी सम्मेलन द्वारा अपनाया गया था।

प्रमुख जानकारी:

- ✓ **क्रियान्वयन:** भारत में इस समझौते को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है।
- ✓ **उद्देश्य:** इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से बाहर के क्षेत्रों में समुद्री जैव विविधता का संरक्षण और सतत उपयोग करना है।

विशेषताएँ:

- ✓ यह महासागरों के जैव विविधता से समृद्ध क्षेत्रों में, जो तनावग्रस्त हैं, समुद्री संरक्षित क्षेत्रों को परिभाषित और सीमांकित करेगा।
- ✓ पक्षकार उच्च समुद्र से प्राप्त समुद्री संसाधनों पर संप्रभुता का प्रयोग नहीं कर सकते।

महत्व:

- ✦ यह समझौता भारत की रणनीतिक उपस्थिति को ईईजेड से परे क्षेत्रों में बढ़ाएगा।
- ✦ यह कई सतत विकास लक्ष्यों (SDGs), विशेष रूप से SDG 14 (पानी के नीचे जीवन) को प्राप्त करने में योगदान करेगा।
- ✦ यह भारत के समुद्री संरक्षण प्रयासों को मजबूत करने, वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास के नए रास्ते खोलने में मदद करेगा।
- ✦ यह पारंपरिक ज्ञान और सर्वोत्तम उपलब्ध वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग को बढ़ावा देगा।

मुख्य मुद्दे:

- ✓ **समुद्री आनुवंशिक संसाधन:** जिसमें लाभों का निष्पक्ष एवं न्यायसंगत बंटवारा शामिल है।
- ✓ **समुद्री संरक्षित क्षेत्र:** क्षेत्र-आधारित प्रबंधन उपकरण जैसे उपाय।
- ✓ **पर्यावरणीय प्रभाव आकलन:** समुद्री पर्यावरण पर होने वाले प्रभावों का मूल्यांकन।
- ✓ **क्षमता निर्माण और समुद्री प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण:** समुद्री तकनीकों का विकास और साझा करना।

UNCLOS के बारे में:

- ✓ यह एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है जिसे 1982 में अपनाया गया और 1994 में लागू हुआ। यह विश्व के महासागरों और समुद्रों में कानून और व्यवस्था की एक व्यापक व्यवस्था निर्धारित करता है।

हाई सीज़ के बारे में:

- ✦ अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार, उच्च समुद्र उन सभी भागों को संदर्भित करता है जो विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ), प्रादेशिक समुद्र या किसी देश के आंतरिक जल में शामिल नहीं हैं।
- ✦ उच्च सागर महासागरीय क्षेत्र का लगभग 64% हिस्सा है और इस पर किसी भी देश का प्रत्यक्ष स्वामित्व या विनियमन नहीं होता।



UNCLOS संधि के मुख्य प्रावधान:

- ✓ **समुद्री क्षेत्रों का वर्गीकरण:** UNCLOS समुद्री क्षेत्रों को पाँच मुख्य क्षेत्रों में विभाजित करता है:
 - ✓ **आंतरिक जल (Internal Waters):** यह क्षेत्र तटीय राज्यों के अंतर्गत आता है, जहां राज्य का पूरा अधिकार होता है।
 - ✓ **प्रादेशिक सागर (Territorial Sea):** तटीय राज्य समुद्र से 12 नॉटिकल मील तक अपने क्षेत्रीय सागर में अधिकार रखता है।
 - ✓ **सन्निहित क्षेत्र (Contiguous Zone):** प्रादेशिक सागर के बाद 12 से 24 नॉटिकल मील तक के क्षेत्र में राज्य सीमित अधिकार रखता है।
 - ✓ **अनन्य आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone - EEZ):** यह 200 नॉटिकल मील तक फैला क्षेत्र होता है, जिसमें राज्य को समुद्री संसाधनों का दोहन करने का अधिकार होता है।
 - ✓ **उच्च समुद्र (High Seas):** यह क्षेत्र सभी देशों के लिए खुला होता है, जहां कोई भी राज्य विशेष अधिकार नहीं रखता।

UNCLOS के उद्देश्य:

- ✦ सागरों और महासागरों के संसाधनों का स्थायी और न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित करना।
- ✦ समुद्र में नेविगेशन की स्वतंत्रता का संरक्षण करना।
- ✦ समुद्री संसाधनों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश प्रदान करना।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR)

हाल ही में CSIR के 83वें स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने संबोधित किया।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR):

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) भारत का प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संगठन है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान कार्यों के लिए जाना जाता है। CSIR का नेटवर्क 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, 39 आउटरीच केंद्रों, 1 नवाचार परिसरों और अखिल भारतीय उपस्थिति वाली तीन इकाइयों से बना है।

CSIR की प्रमुख विशेषताएं:

- वैज्ञानिक नेटवर्क:** CSIR के पास 31 मार्च 2022 तक 3476 सक्रिय वैज्ञानिकों की टीम है, जिन्हें 4000 तकनीकी और सहायक कर्मचारियों का समर्थन प्राप्त है। यह संगठन समुद्र विज्ञान, रसायन, जैव प्रौद्योगिकी, नैनो प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि, और आईटी सहित विभिन्न विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुसंधान करता है।
- बौद्धिक संपदा:** CSIR भारत में बौद्धिक संपदा के क्षेत्र में अग्रणी है। 2022-23 के दौरान, CSIR ने लगभग 250 भारतीय पेटेंट और 213 विदेशी पेटेंट दायर किए। इसके पास कुल 1,132 अद्वितीय पेटेंट हैं, जिनमें से 140 का व्यावसायीकरण किया जा चुका है। यह दुनिया भर में सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित अनुसंधान संगठनों में पेटेंट दाखिल करने और हासिल करने में अग्रणी है।
- वैज्ञानिक योगदान:** CSIR ने 2022 में एससीआई जर्नल्स में लगभग 5800 शोधपत्र प्रकाशित किए, जिनका औसत प्रभाव कारक 4.9 रहा। यह संगठन भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- उद्यमशीलता और नवाचार:** CSIR ने उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए ऐसे तंत्रों को क्रियान्वित किया है, जो क्रांतिकारी और विघटनकारी नवाचारों के विकास और व्यावसायीकरण को प्रोत्साहित करते हैं। इसका उद्देश्य नए आर्थिक क्षेत्रों का विकास करना है।

CSIR का विज़न:

CSIR का विज़न "आत्मनिर्भर भारत" के सपने को साकार करने के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से संधारणीय समाधान और क्षमता निर्माण करना है। इसका उद्देश्य वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) के माध्यम से भारत के नागरिकों की जीवन गुणवत्ता को बढ़ाना है। यह विज़न भारत सरकार के 'अमृत काल' से जुड़ा है, जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष मनाएगा।



CSIR का मिशन स्टेटमेंट:

- प्रौद्योगिकी नवोन्मेष और ट्रांसलेशनल रिसर्च:** CSIR का मिशन राष्ट्रीय लक्ष्यों से जुड़े प्रौद्योगिकी नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देना है।
- भारतीय नागरिक उड्डयन:** CSIR उन्नत प्रौद्योगिकी समाधानों के माध्यम से भारतीय नागरिक उड्डयन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय वांतरिक्ष कार्यक्रमों में योगदान करता है।
- हरित प्रौद्योगिकियों का सृजन:** CSIR का उद्देश्य ऊर्जा क्षेत्र में दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा की दिशा में मापनीय और संधारणीय हरित प्रौद्योगिकियों का निर्माण और प्रदर्शन करना है, जो देश की वास्तविक समय की आवश्यकताओं के अनुरूप हों।
- स्वास्थ्य और कल्याण:** CSIR जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, अभियांत्रिकी, और अभिकलन के संश्लेषण के माध्यम से स्वास्थ्य परिणामों और कल्याण सूचियों में सुधार करता है।
- रसायन और सामग्रियां:** व्यापार घाटे को कम करने के लिए, CSIR विश्व स्तर पर बेंचमार्क वाली संधारणीय प्रक्रियाओं के माध्यम से रसायनों और सामग्रियों के उत्पादन और पुनः उपयोग को प्रोत्साहित करता है।
- कृषि और पोषण सुरक्षा:** जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान के माध्यम से CSIR का लक्ष्य कृषि उत्पादन और पोषण सुरक्षा को सुनिश्चित करना है, जिससे संधारणीय कृषि को बढ़ावा मिल सके।
- पर्यावरण संरक्षण:** CSIR पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और पुनर्नवीकरण के लिए उन्नत प्रथाओं को विकसित करता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित हो सके।

राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM)

हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने तीन राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (एनएसएम) के तहत स्वदेशी रूप से विकसित लगभग 130 करोड़ रुपये की लागत के तीन परम रुद्र सुपरकंप्यूटर राष्ट्र को समर्पित किए। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने मौसम और जलवायु अनुसंधान के लिए तैयार एक हाई-परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग (एचपीसी) प्रणाली का भी उद्घाटन किया।

प्रमुख बिंदु:

1. तीन परम रुद्र सुपरकंप्यूटर:

- ✓ **पुणे:** विशाल मीटर रेडियो टेलीस्कोप (GMRT) का उपयोग करके खगोलीय घटनाओं जैसे फास्ट रेडियो बस्ट (FRB) और अन्य वैज्ञानिक अनुसंधानों को सुविधाजनक बनाना।
- ✓ **दिल्ली:** अंतर-विश्वविद्यालय त्वरक केंद्र (IUAC) में पदार्थ/भौतिक विज्ञान और परमाणु भौतिकी के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देना।
- ✓ **कोलकाता:** एस. एन. बोस केंद्र भौतिकी, ब्रह्मांड विज्ञान और पृथ्वी विज्ञान के क्षेत्रों में उन्नत अनुसंधान को बढ़ावा देना।

2. मौसम और जलवायु अनुसंधान के लिए HPC प्रणाली:

- ✓ यह उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग प्रणाली पुणे के भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (IITM) और नोएडा के राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र (NCMRWF) में स्थित है।
- ✓ यह प्रणाली 'अर्का' और 'अरुणिका' नाम से जानी जाती है, और इसका उपयोग उष्णकटिबंधीय चक्रवात, भारी वर्षा, गरज, सूखा और अन्य मौसम संबंधित गंभीर घटनाओं की सटीक भविष्यवाणी करने में किया जाएगा।

3. आर्थिक निवेश:

- ✓ इन परियोजनाओं में 130 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया गया है।
- ✓ हाई-परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग (HPC) सिस्टम के लिए 850 करोड़ रुपये का निवेश हुआ है।

राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM) के बारे में:

राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM) 2015 में भारत को विश्व स्तरीय सुपरकंप्यूटिंग क्षमताओं से लैस करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। इस मिशन का उद्देश्य देश के शैक्षणिक और अनुसंधान एवं विकास (R&D) संस्थानों को 70 से अधिक उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग (HPC) सुविधाओं के ग्रिड से जोड़ना है, जिससे भारत वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी प्रगति और रणनीतिक क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बन सके। मिशन सरकार की 'डिजिटल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' पहल का समर्थन करता है।

इन सुपरकंप्यूटरों और HPC प्रणाली के विकास से भारत को विज्ञान, मौसम विज्ञान, खगोल विज्ञान और अन्य अनुसंधान क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त होगी।



मिशन का महत्व:

- ✓ यह वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की स्थिति को मजबूत करेगा, क्योंकि वर्तमान में 500 सुपरकंप्यूटरों में से केवल 9 सुपरकंप्यूटर भारत के पास हैं, और देश का स्थान 74वां है।
- ✓ मिशन वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में प्रगति को बढ़ावा देगा, जिसमें क्लाउडमेट मॉडलिंग, मौसम पूर्वानुमान, कम्प्यूटेशनल जीवविज्ञान, परमाणु ऊर्जा सिमुलेशन, और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण अनुप्रयोग शामिल हैं।

प्रमुख अनुप्रयोग क्षेत्र:

- ✓ जलवायु मॉडलिंग और मौसम पूर्वानुमान।
- ✓ एयरोस्पेस इंजीनियरिंग।
- ✓ कम्प्यूटेशनल जीवविज्ञान और आणविक गतिशीलता।
- ✓ परमाणु ऊर्जा सिमुलेशन और राष्ट्रीय सुरक्षा।
- ✓ भूकंपीय विश्लेषण और आपदा प्रबंधन।
- ✓ कम्प्यूटेशनल रसायन विज्ञान और कम्प्यूटेशनल सामग्री विज्ञान।
- ✓ नैनोमेटेरियल्स, खगोल भौतिकी, और बिग डेटा एनालिटिक्स।

ट्राई ने एसएमएस ट्रैफिक के लिए व्हाइटलिस्टेड यूआरएल, एपीकेएस या ओटीटी लिंक को अनिवार्य किया

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) द्वारा 20 अगस्त 2024 को जारी किया गया यह निर्देश संदेशों में यूआरएल (यूनिफ़ॉर्म रिसोर्स लोकेटर) के दुरुपयोग को रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके तहत सभी एक्सेस प्रदाताओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि व्हाइटलिस्ट में शामिल न किए गए यूआरएल, एपीके (एंड्रॉइड पैकेज किट), या ओटीटी (ओवर द टॉप) लिंक वाले किसी भी संदेश को ब्लॉक किया जाए। यह निर्देश 1 अक्टूबर 2024 से लागू होगा।



मुख्य बिंदु:

- यूआरएल/एपीके/ओटीटी लिंक ब्लॉकिंग:** TRAI के निर्देश के अनुसार, व्हाइटलिस्ट में शामिल न किए गए किसी भी यूआरएल, एपीके, या ओटीटी लिंक वाले संदेशों को एक्सेस प्रदाताओं द्वारा अवरुद्ध किया जाएगा।
- पंजीकृत प्रेषकों के लिए सलाह:** पंजीकृत प्रेषकों को निर्देश दिया गया है कि वे अपने व्हाइटलिस्टेड यूआरएल, एपीके, या ओटीटी लिंक को संबंधित एक्सेस प्रदाताओं के पोर्टल पर तुरंत अपलोड करें ताकि उनके संदेश निर्बाध रूप से प्रसारित हो सकें।
- अनुपालन की स्थिति:** अब तक, 3,000 से अधिक पंजीकृत प्रेषकों ने 70,000 से अधिक लिंक को व्हाइटलिस्टेड कर इस आवश्यकता का अनुपालन किया है। जो प्रेषक नियत तिथि तक अपने लिंक व्हाइटलिस्टेड नहीं करेंगे, उनके यूआरएल/एपीके/ओटीटी लिंक वाले संदेशों को प्रसारित नहीं किया जाएगा।
- उपभोक्ताओं की सुरक्षा:** इस पहल का उद्देश्य उपभोक्ताओं को दुर्भावनापूर्ण लिंक वाले अनचाहे संदेशों से बचाना और एक सुरक्षित, पारदर्शी संचार प्रणाली को बढ़ावा देना है।

TRAI का यह कदम डिजिटल संचार क्षेत्र में एक सुरक्षित और विश्वसनीय वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जिससे उपभोक्ताओं को लाभ होगा और पंजीकृत प्रेषकों को भी एक सुरक्षित प्रणाली का हिस्सा बनने का अवसर मिलेगा।

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) के बारे में:

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) की स्थापना 20 फरवरी 1997 को संसद द्वारा पारित भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण अधिनियम, 1997 के अंतर्गत की गई थी। इसका उद्देश्य देश में दूरसंचार सेवाओं का विनियमन करना और सेवाओं के टैरिफ निर्धारण व संशोधन से संबंधित कार्यों को नियंत्रित करना था, जो पहले केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आते थे।

TRAI के उद्देश्य और मिशन:

TRAI का मुख्य उद्देश्य निष्पक्ष और पारदर्शी नीतिगत माहौल बनाना है, जो प्रतिस्पर्धा को सुगम बनाए और सभी सेवा प्रदाताओं को समान अवसर प्रदान करे। इसके साथ ही, TRAI का मिशन देश में दूरसंचार के विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण और संरक्षण करना है, ताकि भारत वैश्विक सूचना समाज में अग्रणी भूमिका निभा सके।

TRAI के कार्य:

- ✓ **विनियम, आदेश और निर्देश जारी करना:** TRAI ने टैरिफ, इंटरकनेक्शन, और सेवा की गुणवत्ता जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कई दिशा-निर्देश और विनियम जारी किए हैं।
- ✓ **दूरसंचार बाजार में प्रतिस्पर्धा:** TRAI ने सरकारी एकाधिकार से बहु-ऑपरेटर और बहु-सेवा वाले खुले प्रतिस्पर्धी बाजार में बदलाव के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं।

TRAI अधिनियम का संशोधन:

24 जनवरी 2000 से लागू किए गए एक अध्यादेश के तहत TRAI अधिनियम को संशोधित किया गया, जिसके अंतर्गत दूरसंचार विवाद निपटान और अपीलीय न्यायाधिकरण (टीडीएसएटी) की स्थापना की गई। इसका मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित विवादों का निपटान करना है:

- लाइसेंसकर्ता और लाइसेंसधारी के बीच,
- दो या अधिक सेवा प्रदाताओं के बीच,
- सेवा प्रदाता और उपभोक्ताओं के समूह के बीच,
- TRAI के निर्देश, निर्णय या आदेशों के खिलाफ अपील की सुनवाई और निपटारा।

टीडीएसएटी के गठन से दूरसंचार क्षेत्र में विवादों के निपटान और अपीलीय प्रक्रियाओं में तेजी लाई गई, जिससे इस क्षेत्र में पारदर्शिता और निष्पक्षता को बढ़ावा मिला।

एकीकृत लॉजिस्टिक्स इंटरफ़ेस प्लेटफॉर्म

हाल ही में, एनआईसीडीसी लॉजिस्टिक्स डेटा सर्विसेज लिमिटेड (NICDC) ने यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफ़ेस प्लेटफॉर्म (यूलिप) के तहत हैकाथॉन 2.0 का शुभारंभ किया। यह आयोजन लॉजिस्टिक्स उद्योग में नवाचार को बढ़ावा देने और चुनौतियों का समाधान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

हैकाथॉन 2.0 के उद्देश्य:

- ✓ **नवाचार को बढ़ावा:** यह कार्यक्रम डेवलपर्स, स्टार्ट-अप्स और उद्योग के अन्य खिलाड़ियों को एकत्रित करता है ताकि वे लॉजिस्टिक्स उद्योग की चुनौतियों के लिए डिजिटल समाधान विकसित कर सकें।
- ✓ **प्रमुख चुनौतियों का समाधान:** इस वर्ष का ध्यान स्थिरता, जटिल आपूर्ति श्रृंखला प्रक्रियाओं, एकीकृत दस्तावेज़ीकरण और मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स अनुकूलन पर है।

यूलिप (यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफ़ेस प्लेटफॉर्म):

- ✦ **डिजिटल गेटवे:** यूलिप एक एपीआई-आधारित प्लेटफॉर्म है जो विभिन्न सरकारी प्रणालियों से लॉजिस्टिक्स-संबंधित डेटा सेट तक पहुंच प्रदान करता है।
- ✦ **एकीकरण:** वर्तमान में, यह प्लेटफॉर्म 118 एपीआई के माध्यम से 10 मंत्रालयों की 37 प्रणालियों से एकीकृत है और 1800 से अधिक डेटा क्षेत्रों को कवर करता है।
- ✦ **लॉन्च:** इसे 17 सितंबर, 2022 को प्रधानमंत्री द्वारा 'राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (एनएलपी)' के भाग के रूप में लॉन्च किया गया था।

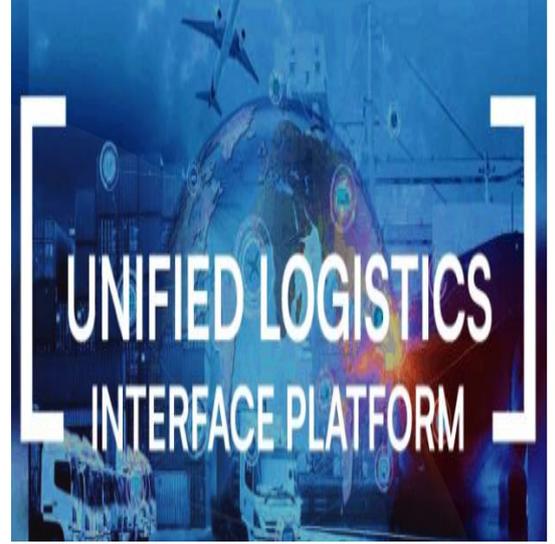
उद्देश्य:

- ✦ **राष्ट्रीय एकल खिड़की प्लेटफॉर्म:** लॉजिस्टिक्स में पूरी दृश्यता के लिए एक व्यापक प्लेटफॉर्म बनाना।
- ✦ **सूचना एकीकरण:** विभिन्न सरकारी एजेंसियों के पास उपलब्ध सूचना को एकीकृत करके एक लॉजिस्टिक्स गेटवे विकसित करना।
- ✦ **दृश्यता प्रदान करना:** परिवहन के विभिन्न साधनों के उपयोग की इष्टतम योजना के लिए दृश्यता प्रदान करना।
- ✦ **सरलीकरण:** डेटा प्रदान करना जिसका उपयोग हितधारकों द्वारा अनुपालन, दस्तावेज़ दाखिल करने, प्रमाणन और अनुमोदन जैसी जटिल प्रक्रियाओं को सरल बनाने के लिए किया जा सके।
- ✦ **डेटा विनिमय:** भारतीय लॉजिस्टिक्स पारिस्थितिकी तंत्र में सरकारी और निजी संस्थाओं के बीच डेटा विनिमय के लिए एक मंच प्रदान करना।

फायदे:

- ✦ सभी लॉजिस्टिक्स हितधारकों को, जैसे ड्राइवरों और वाहनों का सत्यापन, माल की ट्रैकिंग और ट्रेसिंग, मार्ग अनुकूलन योजना और गंतव्य के बारे में समय पर जानकारी प्राप्त होगी।
- ✦ यह निर्णय लेने में सहायता करेगा, जिससे लागत और समय की बचत होगी और लॉजिस्टिक्स के साधनों के इष्टतम उपयोग को सक्षम करेगा।

इस प्रकार, हैकाथॉन 2.0 और यूलिप लॉजिस्टिक्स उद्योग को समृद्ध करने के साथ-साथ प्रक्रिया को सरल और अधिक प्रभावी बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं।



NICDC के बारे में:

NICDC लॉजिस्टिक्स डेटा बैंक (एलडीबी) और यूएलआईपी जैसे अभिनव समाधानों के माध्यम से भारत के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को बदलने में अग्रणी है। इसने उन्नत प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए उद्योग में दक्षता, पारदर्शिता और डिजिटलीकरण को बढ़ाया है।

- ✦ **स्थापना:** NICDC की स्थापना 30 दिसंबर, 2015 को हुई थी।
- ✦ **उद्देश्य:** इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में दक्षता बढ़ाने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का उपयोग करना है।
- ✦ **संयुक्त उद्यम:** यह भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाला राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास और कार्यान्वयन ट्रस्ट (NICDIT) और जापानी आईटी प्रमुख NEC कॉर्पोरेशन के बीच एक संयुक्त उद्यम है।

NICDC का योगदान भारतीय लॉजिस्टिक्स उद्योग को आधुनिक बनाने और इसे अधिक प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण है, जिससे व्यापार और उद्योगों के लिए परिचालन लागत को कम करने में मदद मिलती है।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) - जुलाई 2023 से जून 2024

हाल ही में, आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) द्वारा जुलाई 2023 से जून 2024 की अवधि के लिए बेरोजगारी दर और रोजगार परिदृश्य पर एक रिपोर्ट जारी की गई है।

मुख्य निष्कर्ष (जुलाई 2023 - जून 2024):

1. श्रम बल भागीदारी दर (Labour Force Participation Rate - LFPR):

✓ सामान्य स्थिति (PS + SS) में:

- ✳ 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों के लिए LFPR 60.1% रहा।
- ✳ पुरुषों के लिए LFPR 78.8%।
- ✳ महिलाओं के लिए LFPR 41.7%।

✓ पिछले वर्ष (जुलाई 2022 - जून 2023) में, यह दर 57.9% से बढ़कर 60.1% हो गई।

✓ महिलाओं के लिए, LFPR 37.0% से बढ़कर 41.7% हो गया।

✓ पुरुषों के लिए, LFPR 78.5% से बढ़कर 78.8% हो गया।

2. श्रमिक जनसंख्या अनुपात (Worker Population Ratio - WPR):

✓ सामान्य स्थिति (PS + SS) में:

- ✳ 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों के लिए WPR 58.2% था।
- ✳ पुरुषों के लिए WPR 76.3%।
- ✳ महिलाओं के लिए WPR 40.3%।

✓ महिलाओं के लिए, WPR 35.9% से बढ़कर 40.3% हो गया।

✓ पुरुषों के लिए, WPR 56.0% से बढ़कर 58.2% हो गया।

3. बेरोजगारी दर (Unemployment Rate - UR):

✓ सामान्य स्थिति (PS + SS) में:

- ✳ 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के पुरुषों और महिलाओं के लिए बेरोजगारी दर 3.2% रही।
- ✳ पुरुषों के लिए, बेरोजगारी दर 3.3% से घटकर 3.2% हो गई।
- ✳ महिलाओं के लिए, बेरोजगारी दर 2.9% से बढ़कर 3.2% हो गई।

निष्कर्ष: इस सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि भारत में बेरोजगारी की स्थिति गंभीर बनी हुई है, और विशेषकर युवा बेरोजगारी में कोई सुधार नहीं हुआ है। महिला कार्यबल की भागीदारी में वृद्धि को एक सकारात्मक पहलू माना जा सकता है, लेकिन अन्य क्षेत्रों में स्थिरता की कमी चिंता का विषय है।

PERIODIC LABOUR FORCE SURVEY



आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) क्या है?

- ✓ **परिभाषा:** यह भारत में रोजगार और बेरोजगारी की स्थिति को मापने के लिए सांख्यिकी तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के तहत राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा किया जाने वाला सर्वेक्षण है।
- ✓ **इतिहास:** NSO ने अप्रैल 2017 में रोजगार और बेरोजगारी सर्वेक्षण (EUS) की जगह PLFS शुरू किया।

PLFS का उद्देश्य:

- ☑ प्रमुख रोजगार एवं बेरोजगारी संकेतकों (जैसे श्रमिक जनसंख्या अनुपात, श्रम बल भागीदारी दर, बेरोजगारी दर) का अनुमान लगाना:
- ☑ **अल्पकालिक शहरी फोकस:** वर्तमान साप्ताहिक स्थिति (CWS) का उपयोग करके हर तीन महीने में शहरी क्षेत्रों के लिए प्रमुख संकेतकों का अनुमान लगाना।
- ☑ **वार्षिक ग्रामीण और शहरी मूल्यांकन:** सामान्य स्थिति और CWS दोनों का उपयोग करके, ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लिए सालाना रोजगार एवं बेरोजगारी संकेतकों का अनुमान लगाना।

आईएनएस तुणीर के लिए पांचवें मिसाइल कम एम्युनिशन (एमसीए) बार्ज, एलएसएएम 13 (यार्ड 81) की डिलीवरी



भारतीय नौसेना के लिए एमएसएमई शिपयार्ड, मेसर्स सेकॉन इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, विशाखापत्तनम द्वारा निर्मित 08x मिसाइल कम एम्युनिशन बार्ज परियोजना का पांचवां बार्ज, 'मिसाइल कम एम्युनिशन बार्ज, एलएसएएम 13 (यार्ड 81)', 25 सितंबर 2024 को आईएनएस तुणीर के लिए नौसेना डॉकयार्ड, मुंबई में डिलीवर किया गया।

बार्ज क्या है?

बार्ज एक प्रकार का जहाज होता है, जिसे आमतौर पर नदियों या नहरों में भारी सामान ढोने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह एक चौड़े पेंदे वाला, फ्लैट तले का जहाज होता है, जिसे अन्य जहाजों द्वारा खींचा या धकेला जा सकता है। बार्ज को आमतौर पर बड़े पैमाने पर सामग्री जैसे कोयला, अनाज, या निर्माण सामग्री ले जाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

प्रमुख जानकारी:

- ❑ 08x मिसाइल कम एम्युनिशन बार्ज के निर्माण के लिए रक्षा मंत्रालय और मेसर्स सेकॉन इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड के बीच अनुबंध पर 19 फरवरी 2021 को हस्ताक्षर किए गए थे।
- ❑ उद्देश्य: इन बार्जों के शामिल होने से भारतीय नौसेना की परिचालन प्रतिबद्धताओं को बढ़ावा मिलेगा, जिससे जेटी और बाहरी बंदरगाहों के साथ-साथ भारतीय नौसेना के प्लेटफार्मों तक वस्तुओं और एम्युनिशन के परिवहन, चढ़ने और उतरने में सुविधा होगी।
- ❑ स्वदेशी निर्माण: ये बार्ज भारतीय शिपिंग रजिस्टर के विनियमों के तहत स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित किए गए हैं।
- ❑ परीक्षण: डिजाइन चरण के दौरान बार्ज के मॉडल का परीक्षण विशाखापत्तनम स्थित नौसेना विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला में किया गया।
- ❑ 'मेक इन इंडिया' पहल: ये बार्ज भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल के एक प्रमुख उदाहरण हैं।

इस परियोजना से भारतीय नौसेना की सामरिक क्षमताओं में वृद्धि होगी और स्वदेशी निर्माण को भी बढ़ावा मिलेगा।

मोनोकल्ड कोबरा (Naja kaouthia)

एक नए अध्ययन के अनुसार, मोनोकल्ड कोबरा (Naja kaouthia) के काटने के उपचार प्रक्रिया में सुधार के लिए प्रजाति-विशिष्ट और क्षेत्र-विशिष्ट विषरोधी (एंटीवेनम) की आवश्यकता है। मोनोकल्ड कोबरा, जो पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत, नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार, थाईलैंड, वियतनाम, मलेशिया और दक्षिणी चीन में पाया जाता है, के काटने से मस्तिष्क और परिधीय तंत्रिका तंत्र को गंभीर नुकसान पहुंच सकता है, जिससे गंभीर चिकित्सा स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।

अध्ययन की प्रमुख बातें:

- ✓ **जहर की जटिलता:** मोनोकल्ड कोबरा का जहर नष्ट हो चुके ऊतकों के कारण गंभीर स्थितियों का कारण बनता है। हालांकि, इस जहर से संबंधित डेटा एकत्र करना कठिन है, क्योंकि गलत रिकॉर्ड, डायग्नोस्टिक किट की कमी, और समन्वित महामारी विज्ञान जांच की कमी है।
- ✓ **शोधकर्ता टीम:** तेजपुर विश्वविद्यालय और अमृता विश्व विद्यापीठम के वैज्ञानिकों के एक समूह ने नाजा कौथिया के जहर (NKV) की संरचना में भिन्नताओं का अध्ययन किया। इसका नेतृत्व प्रोफेसर आशीष के मुखर्जी ने किया।
- ✓ **विष की विविधता:** अध्ययन में पाया गया कि जहर की आइसोफॉर्म में गुणात्मक और मात्रात्मक भिन्नताओं के कारण घातकता और पैथोजिजियोलॉजिकल उपलब्धता में परिवर्तनशीलता होती है, जो विषरोधी चिकित्सा की प्रभावशीलता को बाधित कर सकती है।
- ✓ **एंटीबॉडी की कमी:** सामान्य उपयोग की विषरोधी औषधियों में जहर-विशिष्ट एंटीबॉडी की कमी पाई गई, जिससे यह निष्कर्ष निकला कि कमर्शियल पॉलीक्लोनल एंटीवेनम (PAV) नाजा कौथिया के जहर के नमूनों की घातकता को प्रभावी ढंग से बेअसर नहीं कर सका।

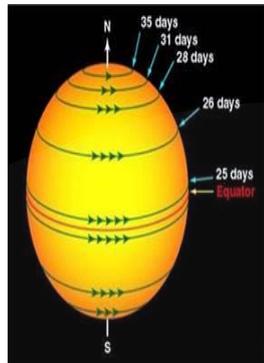
सिफारिशें:

- ❑ **विशिष्ट एंटीबॉडी का समावेश:** अध्ययन में नाजा कौथिया विष के बेहतर प्रबंधन के लिए कमर्शियल PAV मिश्रण में प्रजाति-विशिष्ट और क्षेत्र-विशिष्ट एंटीबॉडी को शामिल करने की सिफारिश की गई है।
- ❑ **नैदानिक जांच:** उन क्षेत्रों में जहां नाजा कौथिया सांप सामान्य रूप से पाए जाते हैं, जहर पर नैदानिक जांच का सुझाव दिया गया है।
- ❑ **टीकाकरण प्रोटोकॉल में सुधार:** नाजा कौथिया के जहर के कम इम्युनोजेनिक घटकों के खिलाफ एंटीबॉडी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा टीकाकरण प्रोटोकॉल में सुधार किया जा सकता है, जिससे सांप के काटने के इलाज में सुधार हो सके।

इस अध्ययन का उद्देश्य नाजा कौथिया सांप के काटने के मामलों में बेहतर उपचार प्रक्रियाओं का विकास करना है, जिससे प्रभावित व्यक्तियों की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार हो सके।

खगोलविदों ने सूर्य के क्रोमोस्फीयर के असमान घूर्णन को मापा

खगोलविदों ने कोडईकनल सौर वेधशाला में सूर्य के 100 वर्षों के दैनिक रिकॉर्ड का उपयोग करते हुए पहली बार सूर्य के क्रोमोस्फीयर की घूर्णन गति में होने वाले परिवर्तन का मानचित्रण किया है। यह शोध सूर्य के आंतरिक कार्यों की पूरी तस्वीर प्रस्तुत करने में सहायक हो सकता है।



महत्वपूर्ण बिंदु:

सूर्य की घूर्णन गति:

- ✓ पृथ्वी के विपरीत, जो हर जगह समान गति से घूमती है, सूर्य के विभिन्न भाग विभिन्न गति से घूर्णन करते हैं।
- ✓ सूर्य की भूमध्य रेखा अपने ध्रुवों की तुलना में अधिक तेजी से घूमती है। भूमध्य रेखा को एक चक्कर पूरा करने में 25 दिन लगते हैं, जबकि ध्रुवों को 35 दिन लगते हैं।

विभेदक घूर्णन: इस घूर्णन गति में अंतर को विभेदक घूर्णन कहा जाता है। यह सौर चुंबकीय क्षेत्र और सौर गतिविधियों के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।

शोध विधि:

- ✓ भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (आईआईए) के खगोलविदों ने कोडईकनल सौर वेधशाला द्वारा बनाए गए सूर्य के 100 वर्षों के रिकॉर्ड से सौर प्लेज और नेटवर्क का उपयोग किया।
- ✓ यह वेधशाला इस वर्ष अपनी 125वीं वर्षगांठ मना रही है।

डेटा संग्रहण: क्रोमोस्फीयर का दस्तावेजीकरण फोटोग्राफिक प्लेटों और फिल्मों के माध्यम से किया गया, जिसे हाल ही में बड़े प्रारूप वाले सीसीडी कैमरे का उपयोग करके डिजिटलीकरण किया गया।

परिणाम:

- ✓ शोध से यह पता चला कि प्लेज और नेटवर्क दोनों विशेषताओं ने समान घूर्णन दर प्रदर्शित की, जो सूर्य के आंतरिक भाग में संभावित साझा उत्पत्ति का संकेत देती है।
- ✓ अध्ययन में विभिन्न अक्षांशों पर इन विशेषताओं की घूर्णन अवधि का पता लगाया गया, जिससे सूर्य के विभेदक घूर्णन की स्पष्ट तस्वीर सामने आई।

शोध का महत्व: इस अध्ययन से प्राप्त जानकारी सूर्य के चुंबकीय क्षेत्र और गतिविधियों को समझने में महत्वपूर्ण है, और यह भविष्य के अनुसंधान के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। शोधपत्र *एस्ट्रोफिजिकल जर्नल* में प्रकाशित हुआ है, जिसका शीर्षक "इक्वेटर टू पोल सोलर क्रोमोस्फेरिक डिफरेंशियल रोटेशन यूजिंग सीए-के फीचर्स डेयुस्युड फ्रॉम कोडाइकनल डेटा" है।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र

भारतीय माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र ने विनियामक सुधारों, तकनीकी उन्नति और सरकारी पहलों के कारण महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिससे लाखों पहले वंचित परिवारों को ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। इस क्षेत्र ने अपनी 50वीं वर्षगांठ मनाते हुए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया है।

इतिहास और विकास:

भारतीय माइक्रोफाइनेंस की शुरुआत 1974 में गुजरात में हुई, जब स्व-नियोजित महिला संघ (सेवा) बैंक की स्थापना की गई। यह भारत का पहला माइक्रोफाइनेंस संस्थान (MFI) था, जिसका मुख्य उद्देश्य गरीब महिलाओं को वित्तीय सेवाएं प्रदान करना था। तब से, माइक्रोफाइनेंस ने ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सेवाएं:

माइक्रोफाइनेंस, जिसे माइक्रोक्रेडिट भी कहा जाता है, गरीब व्यक्तियों या समूहों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करने का एक साधन है। इसमें कई सेवाएं शामिल हैं, जैसे:

- बचत और चेकिंग खाते
- फंड ट्रांसफर
- माइक्रो इंश्योरेंस
- माइक्रोक्रेडिट



जोखिम:

- ✓ ऋण जोखिम: ग्राहकों द्वारा ऋण चुकाने में विफलता का खतरा।
- ✓ ऑपरेशनल जोखिम: प्रक्रियाओं और प्रणालियों में कमियों के कारण होने वाली समस्याएं।
- ✓ लिक्विडिटी जोखिम: नकदी प्रवाह में कमी के कारण दायित्वों को पूरा करने में असमर्थता।
- ✓ मुद्रा जोखिम: विभिन्न मुद्राओं में लेन-देन के दौरान होने वाली समस्याएं।
- ✓ प्रतिष्ठा जोखिम: नकारात्मक प्रचार के कारण ग्राहकों का विश्वास खोना।

नियामक जोखिम: कानूनों में बदलाव के कारण संचालन और लाभप्रदता पर प्रभाव।

वर्तमान स्थिति:

भारतीय माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र ने तेजी से वृद्धि दर्ज की है। 2012 से 2022 तक, इसका सकल ऋण पोर्टफोलियो INR 17,000 करोड़ से बढ़कर INR 2.85 लाख करोड़ हो गया है। हाल के वर्षों में लाभप्रदता में वृद्धि हुई है, जबकि COVID-19 महामारी जैसी चुनौतियों का सामना करने में लचीलापन भी दिखाई दिया है।

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (CDSCO) ने 50 से अधिक दवाओं को मानक गुणवत्ता के स्तर से नीचे का घोषित किया।

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (CDSCO) ने हाल ही में 53 दवाओं को 'गुणवत्ता अनुरूप मानक का अभाव' के रूप में चिह्नित किया है, जिसमें पैरासिटामोल और पैन D जैसी दवाएँ शामिल हैं। इस निर्णय ने इन दवाओं के उपभोग के संबंध में गंभीर सुरक्षा चिंताएँ उत्पन्न की हैं।



CDSCO द्वारा जारी सूचियाँ:

- ✓ **48 दवाएँ:** CDSCO ने एक सूची जारी की है जिसमें 48 दवाएँ गुणवत्ता परीक्षण में विफल रही हैं।
- ✓ **5 दवाएँ (NSQ अलर्ट):** दूसरी सूची में 5 दवाओं को "गुणवत्ता अनुरूप मानक का अभाव" (NSQ अलर्ट) के रूप में चिह्नित किया गया है।

यह सूचियाँ राज्य औषधि अधिकारियों द्वारा लिए गए यादृच्छिक मासिक नमूनों के आधार पर तैयार की गई हैं।

CDSCO का परिचय:

- ✦ CDSCO, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन कार्य करने वाला केंद्रीय औषधि प्राधिकरण है, जो औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के तहत भारत सरकार को सौंपे गए कार्यों का निर्वहन करता है।

CDSCO के प्रमुख कार्य:

- ☑ **दवा आयात पर नियामक नियंत्रण:** CDSCO दवा आयात की निगरानी और नियमन करता है।
- ☑ **नई दवाओं और नैदानिक परीक्षणों की मंजूरी:** नए दवाओं के विकास और नैदानिक परीक्षणों को मंजूरी देने की प्रक्रिया को संचालित करता है।
- ☑ **केंद्रीय लाइसेंस अनुमोदन:** कुछ विशेष लाइसेंसों को जारी करने का कार्य भी CDSCO के अंतर्गत आता है।

सुरक्षा चिंताएँ:

इस स्थिति के परिणामस्वरूप, उपभोक्ताओं के लिए इन दवाओं की गुणवत्ता और सुरक्षा को लेकर चिंताएँ उत्पन्न हो गई हैं। CDSCO की यह पहल दवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने और उपभोक्ताओं की सुरक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940:

औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 (Drugs and Cosmetics Act, 1940) भारत की संसद द्वारा पारित एक महत्वपूर्ण अधिनियम है। इसका मुख्य उद्देश्य देश में औषधियों और सौंदर्य प्रसाधनों के आयात, निर्माण, और वितरण को नियंत्रित करना है।

पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP)

हाल ही में राजस्थान के मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP) बहुत बड़ी है और इसे पूरा करने के लिए राजस्थान और मध्य प्रदेश दोनों मिलकर काम कर रहे हैं।

पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP):

पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP) एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य दक्षिणी राजस्थान में नदियों में मौजूद अतिरिक्त जल को एकत्रित करना और उसे जल की कमी वाले क्षेत्रों में, विशेष रूप से दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में, पीने और सिंचाई के लिए उपलब्ध कराना है।



मुख्य विशेषताएँ:

- ✓ **जल का संचयन:** कालीसिंध, पार्वती, मेज और चाकन उप-बेसिनों में उपलब्ध अधिशेष मानसून जल का उपयोग किया जाएगा।
- ✓ **अंतर-बेसिन हस्तांतरण:** चंबल बेसिन के भीतर जल का अंतर-बेसिन हस्तांतरण किया जाएगा।
- ✓ **सिंचाई का विस्तार:** इस परियोजना से लगभग 2.82 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा मिलेगी।
- ✓ **जल आपूर्ति:** यह परियोजना दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे को भी जल आपूर्ति करेगी, जिससे औद्योगिक विकास में सहायता मिलेगी।
- ✓ **बाढ़ और सूखा प्रबंधन:** क्षेत्र में बाढ़ और सूखे की स्थिति का ध्यान रखा जाएगा।

चंबल नदी के बारे में मुख्य तथ्य:

- ☑ **स्थान:** चंबल नदी मध्य भारत में यमुना नदी की एक सहायक नदी है और यह वृहत्तर गंगा जल निकासी प्रणाली का हिस्सा है।
- ☑ **उद्गम:** इसका उद्गम विन्ध्य पर्वत की उत्तरी ढलान पर सिंगार चोरी चोटी से होता है।
- ☑ **मार्ग:** यह नदी उत्तर-उत्तरपूर्व में मध्य प्रदेश से होकर बहती है, कुछ समय तक राजस्थान से होकर बहती है, फिर उत्तर प्रदेश में यमुना में मिल जाती है।
- ☑ **भौगोलिक विशेषताएँ:** चंबल नदी बेसिन विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं और अरावली पर्वत से घिरा है।
- ☑ **प्रदूषण मुक्त:** यह भारत की सबसे अधिक प्रदूषण मुक्त नदियों में से एक मानी जाती है।

सहायक नदियाँ: बनास, काली सिंध, सिप्रा, पारबती, आदि।

प्रमुख बांध: गांधी सागर बांध, राणा प्रताप सागर बांध, जवाहर सागर बांध

राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य: यह अभयारण्य राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के त्रि-जंक्शन पर चंबल नदी के किनारे स्थित है।

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)



Only at

99/- Year

Enroll Now!





APNI PATHSHALA

UPPSC, RO/ARO, BPSC, UP TEST SERIES

UPPSC

(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

RO/ARO

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

BPSC

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299
YEAR

SSC

(TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR

RPF

(TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR



Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH



Subject

HISTORY ,POLITY

GEOGRAPHY

ECONOMICS

Price

1499/-

**Validity
1 Year**

By Ankit Avasthi Sir



GA FOUNDATION

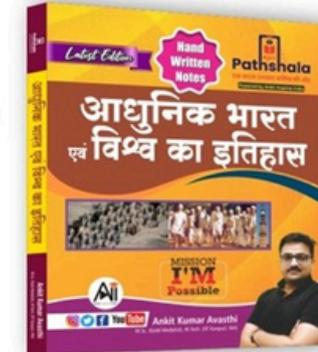
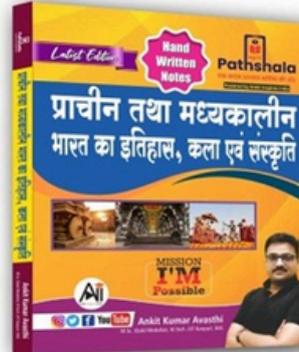
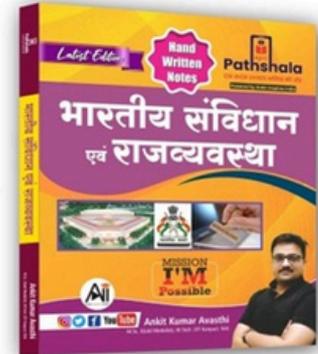
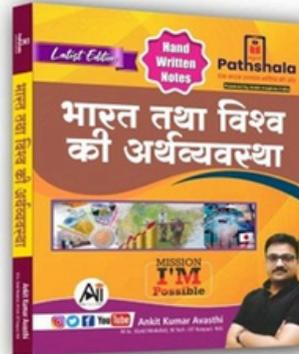
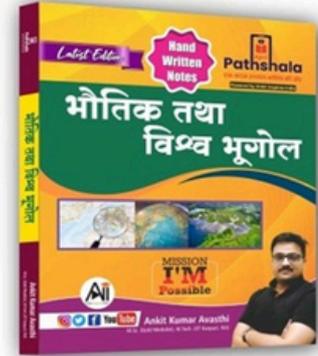
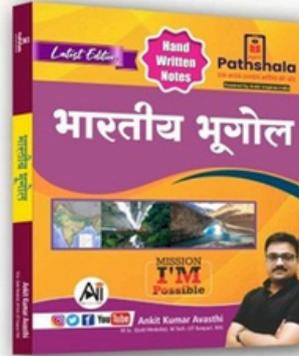
Hand Written
Notes


Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर


Ani
Ankit Inspires India

₹ **Only**
1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट



अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**

RRB NTPC

TEST SERIES

- ✓ 100+ Mock Test
- ✓ 78 Sectional Test
- ✓ 40+ years PYPs
- ✓ 60+ Current affairs

TEST



Only

99 *Per Year*

Buy Now

